

रचनात्मकता अथवा रचनात्मक चिन्तन (Creativity or Creative Thinking)

रचनात्मक चिन्तन, चिन्तन का एक प्रमुख प्रकार है। हरलॉक ने सर्जनात्मक चिन्तन के क्षेत्र में किये गये शोधों एवं अध्ययनों की समीक्षा करके बतलाया कि सर्जनात्मक चिन्तन को आठ अर्थों में प्रयोग किया गया है।

Dreverdahl (1956) के अनुसार रचनात्मक चिन्तन व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिसमें वह कुछ ऐसी नयी चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है एवं जो पहले से उसे ज्ञात नहीं होता है। यह एक काल्पनिक क्रिया या चिन्तन संश्लेषण हो सकता है। यह निश्चित रूप से उद्देश्यपूर्ण या लक्ष्य निर्देशित होता है न कि निराधार स्वप्न चित्र होता है।

Baron (2001) के अनुसार :- मनोवैज्ञानिकों द्वारा रचनात्मकता को ऐसा कार्य करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है जो नवीन (मौलिक, अप्रत्याशित) तथा उचित (लाभदायक या लक्ष्य को पूर्ण करने वाला, कार्य अवरूढता को दूर करने लायक) दोनों ही होते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं से रचनात्मक चिन्तन का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं।

- (1) रचनात्मक चिन्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो लक्ष्य निर्देशित होता है। इसमें व्यक्ति को लक्ष्य निश्चित रूप से पता होता है और उसका प्रत्येक व्यवहार इसी लक्ष्य से सम्बन्धित होता है।
- (2) सर्जनात्मक चिन्तन में व्यक्ति कुछ नया एवं अलग-अलग चीजों की रचना करता है। इसलिये यह उस व्यक्ति के लिये भी अनूठा (Unique) होता है।

- (3) यह अनुठी रचना शाब्दिक (Verbal), अशाब्दिक (Non-Verbal), मूर्त (concrete) या अमूर्त (abstract) कुछ भी हो सकता है।
- (4) रचनात्मक चिन्तन में व्यक्ति समस्या के भिन्न-भिन्न दिशाओं में चिन्तन करता है। इस तरह भिन्न-भिन्न दिशाओं में चिन्तन करने की क्षमता को अपसरण चिन्तन (Divergent Thinking) भी कहा जाता है।
- (5) सर्जनात्मक चिन्तन, चिन्तन का एक विशेष तरीका है। यह बुद्धि से एक अलग सम्प्रत्यय है क्योंकि बुद्धि में सर्जनात्मक चिन्तन के अलावा भी अन्य मानसिक क्षमताएँ सम्मिलित होती हैं।
- (6) सर्जनात्मक चिन्तन करने की क्षमता व्यक्ति द्वारा पहले से प्राप्त सार्थक ज्ञान पर निर्भर करती है। यह सार्थक ज्ञान जितना अधिक होगा, सर्जनात्मक चिन्तन की क्षमता उतनी ही अधिक होगी।
- (7) सर्जनात्मक रूप से सोचते समय व्यक्ति कुछ अर्धपूर्ण कल्पनाएँ करता है। इसी अर्धपूर्ण कल्पना का ही परिणाम होता है कि व्यक्ति कुछ वैज्ञानिक, कलात्मक तथा साहित्यिक रचना कर पाता है।
- (8) सर्जनात्मक चिन्तन में कुछ सीमा तक अभिसारी चिन्तन (Convergent Thinking) भी सम्मिलित होता है। अभिसारी चिन्तन करके व्यक्ति कुछ इस तरह की रचनाएँ व सामग्री को इकट्ठा करता है जिनसे उसे रचनात्मक समाधान में मदद मिलती है।
- Morgan, King, Weisberg & Schopler ने भी कहा है कि अन्तिम सर्जनात्मक समाधान के लिये रचनात्मक रूप से सोचने वाला व्यक्ति अभिसारी चिन्तन द्वारा महत्वपूर्ण रचनाओं एवं विचारों को सक्रिय करता है।

रचनात्मक चिन्तन की अवस्थाएँ (Stages of Creative Thinking)

1. आयोजन (Preparation) :- इस अवस्था में समस्या से सम्बन्धित आवश्यक तथ्यों एवं प्रमाणों को एकत्रित करने की तैयारी किया जाता है। समस्या को ठीक ढंग से परिभाषित करके उसके पक्ष-विपक्ष में प्रमाण एकत्रित किया जाता है। इसमें व्यक्ति प्रयत्न व त्रुटि (Trial & Error) का भी सहारा लेता है। समस्या के स्वरूप तथा व्यक्ति के ज्ञान के अनुसार यह चरण लम्बे या कम समय तक के लिये होता है।
2. उद्भवन (Incubation) :- समस्या समाधान व्यवहार की यह दूसरी अवस्था होती है। इस अवस्था में व्यक्ति में निष्क्रियता बढ़ जाती है और थोड़े समय के लिये समस्या के बारे में चिन्तन करना छोड़ देता है। जब कई बार प्रयत्न करने के बाद भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो पाता है तब इस अवस्था की उत्पत्ति होती है। यद्यपि व्यक्ति अपना ध्यान समस्या से हटा लेता है फिर भी अचेतन रूप से उसके बारे में सोचते रहता है।
3. प्रबोधन (Illumination) :- इस अवस्था में अचानक व्यक्ति को समस्या का समाधान दीख पड़ता है। Silverman (1978) के अनुसार समाधान का अचानक अनुभव को प्रबोधन कहा जाता है। यह अवस्था प्रत्येक रचनात्मक चिन्तन में पायी जाती है। उद्भवन अवस्था में जब व्यक्ति अचेतन रूप से समस्या के भिन्न-भिन्न पहलुओं को पुनर्संश्लेषित करते रहता है तो अचानक उसे समस्या का समाधान नजर आ जाता है। प्रबोधन की यह चटना ~~यह~~ सूझ (Insight) के समान है।

(4) प्रमाणीकरण या संशोधन : - प्रमाणीकरण या संशोधन
(Verification or Revision) रचनात्मक चिन्तन की

चौथी अवस्था है। इस अवस्था में प्रबोधन की अवस्था से प्राप्त समाधान या निष्कर्ष की जांच किया जाता है। इस अवस्था में यह देखने की कोशिश की जाती है कि जो समाधान प्राप्त हुआ है, वह ठीक है या नहीं। जांच करने के बाद जब व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि निष्कर्ष सही नहीं है तो वह सम्पूर्ण कार्यविधि का संशोधन (Revision) करता है और पुनः समाधान की खोज करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि रचनात्मक चिन्तन की चार अवस्थाएँ हैं जो एक निश्चित क्रम में होती हैं।